ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत।
आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत।। १२ ।।

यह सब गवाहियां कहती हैं कि कयामत नजदीक आ गई है। तुम भी सावचेत क्यों नहीं होते, जबकि कयामत सिर पर आ गई है?

साथ जी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोंचत।
चेत सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत।। १३ ।।

श्री महामतिजी पुकार कर कहते हैं, हे साथजी! चेत (जाग) सको तो चेतो। माया के विकारों को छोड़कर दिल निर्मल किए बिना अखण्ड घर न जा सकेंगे।

॥ प्रकरण ॥ १०४ ॥ चौपाई ॥ १५३३ ॥

राग श्री

मैं पूछत हों ब्रह्मसृष्ट को, दिल की दीजो बताए।।। टेक ।।
जो कोई ब्रह्म सृष्ट का, सो देखियो दिल विचार।
कहियो तेहेकीक करके, जिनों जो किया करार।। १ ।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टियों से दिल की बातें पूछ रहे हैं। वह कहते हैं कि जो कोई ब्रह्मसृष्टि हो, वह विचार करें, जिन्होंने जो निश्चय किया है, वह बताओ।

सब कोई बात विचारियो, देख अपनी अपनी अकल।
सृष्ट तीनों करम करत हैं, एक दूजे सों मिल।। २ ।।

सब कोई इस बात का अपनी अक्ल से विचार करना कि जीवसृष्टि, ईश्वरीसृष्टि और ब्रह्मसृष्टि एक-दूसरे से मिलकर संसार में कैसे रहती हैं?

सो तीनों अब जुदे होएसी, है हाल तुम्हारा क्यों कर।
दिन एते जान्या त्यों किया, अब आए पोहोंची आखिर।। ३ ।।

अब यह तीनों कयामत के समय में अलग-अलग हो जाएंगी। इतने दिन तक तुमने जैसा चाहा वैसा किया। अब तुम्हारा क्या हाल है?

पूजे परमेश्वर करके, दिल में राखें दोए।
तिन कारन पूछत हों, कौन विध याकी होए।। ४ ।।

जो मुझे प्राणनाथ करके पूजते हैं और दिल में दुविधा रखते हैं। इस कारण पूछती हूं कि अब उनका क्या हाल होगा?

कहें परमेश्वर मुख थें, दिल चोरावें जे।
दगा देवें मांहें दुस्मन, क्या नहीं देखत हो ए।। ५ ।।

मुझे अपने मुख से प्राणनाथ कहते हैं और दिल की बात छिपाते हैं। सुन्दरसाथ में बैठकर दगा देते हैं, दुश्मनी करते हैं। क्या इस बात को नहीं देखते हो।

कहावत हैं ब्रह्म सृष्ट में, धनीसों छिपावें बात।
दिल की करें औरन सों, ए कौन सृष्ट की जात।। ६ ।।

अपने को ब्रह्मसृष्टि कहते हैं और धनी से बातें छिपाते हैं। दिल की बातें औरों को बताते हैं। इनको किस सृष्टि का माना जाए?

Nijanand App

ए जो दोए दिल राखत हैं, ए तो दुनियां की रीत।
मांहें मैले बाहेर उजले, ए जीव सृष्ट की प्रीत।। ७ ।।

दुनियां वालों के दो दिल होते हैं। वह अन्दर से दुश्मन और बाहर से दोस्त दिखाई देते हैं। यह जीवसृष्टि का तरीका है।

एकै बात ब्रह्म सृष्ट की, दोए दिल में नाहें।
सोई करें धनीसों जाहेर, जैसी होए दिल मांहें।। ८ ।।

ब्रह्मसृष्टि के दो दिल नहीं होते। उनके दिल में एक ही बात होती है। जो उनके दिल में होती है, वह सब धनी को बता देते हैं।

मिनों मिनें गुझ करें, निस दिन एही चितवन।
बुरा चाहें तिनका, जिन देखाया मूल वतन।। ९ ।।

जो दिन-रात आपस में गुझ (गुह्य) बातें करते हैं और रात-दिन उसी में उनका चित्त लगा रहता है। जिसने उनको परमधाम का रास्ता दिखाया है उसी का ही बुरा चाहते हैं।

पीठ चोरावें धनी सों, करें मिनो मिने खोल।
ए देखो अंदर की जाहेर, देखावें अपना मोल।। १० ।।

ऐसे सुन्दरसाथ धनी के सामने नहीं आते। आपस में दिल खोलकर बातें करते हैं। यह उनके अन्दर की कपट वाली बातें ही उनको धनी की नजर से गिराती हैं।

करें धनी सों चोरियां, चोरों सों तेहे दिल।
यों जनम खोवें फितुए मिने, रात दिन हिल मिल।। ११ ।।

ऐसे सुन्दरसाथ धनी से मुंह छिपाते हैं और उन चोरों से दोस्ती करते हैं, जिनसे रात-दिन हिल-मिल करके अपने जीवन को व्यर्थ में गंवाते हैं।

करें लड़ाइयां आप में, कहें हम है धाम के।
क्यों ना विचारो चितमें, कैसा जुलम है ए।। १२ ।।

आपस में लड़ते हैं और कहते हैं कि हम परमधाम के हैं। हे सुन्दरसाथजी! विचार कर देखो। यह कितना बड़ा गुनाह है?

चरचा सुनें वतन की, जित साथ स्यामा जी स्याम।
सो फल चरचा को छोड़ के, जाए लेवत हैं हराम।। १३ ।।

श्री राजजी, श्री श्यामाजी और सुन्दरसाथ जहां है, उस अखण्ड घर परमधाम की चर्चा सुनते हैं। उस चर्चा का फल छोड़कर फिर माया को जा चिपकते हैं।

बाहेर देखावें बंदगी, माहें करें कुकरम काम।
महामत पूछे ब्रह्मसृष्ट को, ए बैकुंठ जासी के धाम।। १४ ।।

श्री महामतिजी ब्रह्मसृष्टियों से पूछते हैं कि जो बाहर से बन्दगी दिखाते हैं और अन्दर से छल-कपट दिखाते हैं वह अन्त समय में बैकुण्ठ जाएंगे कि धाम? अर्थात् विचारो। यह ब्रह्मसृष्टि है या जीवसृष्टि?

॥ प्रकरण ॥ १०५ ॥ चौपाई ॥ १५४७ ॥

Nijanand App